om 8 initial_Page 1 and 2 10-07-2014 21:34 Page 12



# सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

## स्वमान- मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ।

सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, लेकिन ब्रह्माचारी बनकर रहना। ब्रह्माचारी अर्थात् सदा ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला। कोई भी विकार अंश मात्र भी न हो तब कहेंगे - सम्पूर्ण पवित्रता।

**योगाभ्यास -** रूहानी ड्रिल - विज़न बनाएं - लाइट के शरीर में भृकुटि के मध्य मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा चमक रही हूँ। मुझसे पवित्रता की श्वेत रश्मियां चारो ओर फैल रही है। इसके बाद अनुभव करें कि मैं परम पवित्र फरिश्ता ग्लोब पर स्थित होकर विश्व की सर्व आत्माओं को सकाश दे रहा हूँ। स्वयं को परमधाम में पवित्रता के सूर्य की किरणों के नीचे देखें, उनसे पवित्रता की अथाह किरणें निकलकर मुझ पर बरस रही हैं और मुझे भरपूर कर रही हैं।

**धारणा -** पवित्रता। मरजीवा ब्राह्मण जन्म लेते ही बाबा ने हम सभी बच्चों को पवित्र भव और योगी भव का वरदान दिया है। तो पवित्रता इस ब्राह्मण जीवन का वरदान है। जिसके अंदर जितनी अच्छी पवित्रता उसका उतना ही अच्छा योग। अगर योग नहीं लगता तो ज़रूर कहीं न कहीं सूक्ष्म में अपवित्रता है। तो योग का सम्पूर्ण सुख लेने के लिए अपनी पवित्रता की स्थिति को मज़बूत बनाएं। इसके लिए - सारा दिन आत्म-अभिमानी स्थिति में रह सर्व को आत्मिक दृष्टि से देखें। मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ - इस स्वमान का सारे दिन में बार-बार गहराई से अभ्यास करें।

**चिन्तन -** क्या सारे दिन में मनसा, वाचा कर्मणा की पूरी पवित्रता रही और यदि नहीं तो क्यों? सम्पूर्ण पवित्र आत्माओं की क्या-क्या निशानियां होंगी? सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति तक कैसे पहुंचा जाए?

**याद रहे -** बापदादा की दिल पसंद स्थिति है - सम्पूर्ण पवित्रता। इसलिए सम्पूर्ण पवित्र बच्चे ही उसे सबसे अधिक प्रिय लगते हैं। साधकों प्रति - हे बापदादा की आशाओं के दीपक! क्या तुम उसकी आशाओं को पूर्ण करना चाहते हो? यदि हाँ, तो अब उसकी यही आशा है कि अलबेलेपन, आलस्य और बहानेबाज़ी की नींद से जागो...। ऐसे नहीं सोचो कि कौन अभी सम्पन्न बना है....कर लेंगे....बन ही जाएंगे...अब यह गे...गे...की भाषा को छोड़ो और दृढ़ संकल्प करो कि अब बनना ही है करना ही है। चाहे पहाड़ जैसी परिस्थिति आ जाए...कुछ भी सुनना पड़े या सहन करना पड़े...लेकिन अब हमें अपनी दृढ़ता से पीछे नहीं हटना है...अब मुझे दूसरे को नहीं देखना है...मुझे स्वयं को देखना है...मुझे स्व को देखना है और स्व को ही परिवर्तन करना है...तब कहेंगे बापदादा की आशाओं को पूर्ण करने वाले ब्राह्मण कुल दीपक।

प्यारे बापदादा ने हम सभी को विशेष होमवर्क दिया कि दुआएं लेनी है और दुआएं देनी है...। कोई कैसा भी हो, चाहे कोई बद्दुआ दे...अपमान करे, तो भी हमें उसके प्रति अपनी भावनाओं को खराब नहीं करना है। ईश्वरीय महावाक्य हैं - जो बच्चे एक बार भी सहन कर लेते हैं वह सौ गुना परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जाते हैं।

## स्वमान - मैं परमात्म स्नेही हूँ।

ज़रा देखें, अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को, स्वयं भगवान के स्नेह के पात्र बन गये...पांच हज़ार वर्ष तक तुम देवात्माओं के स्नेह के पात्र बने...लेकिन अब यह थोड़ा सा समय है, भगवान के स्नेह का पात्र बनने के लिए...और यह परमात्म-स्नेह इस थोड़े से समय में केवल तुम बच्चों को ही प्राप्त होता है...तो अपने को याद दिलायें...हे आत्मा! यदि तुमने परमात्म-स्नेह का अनुभव अब नहीं किया तो फिर कब करेंगे?

**योगाभ्यास -** मैं इष्ट देव हूँ - इष्टदेव बनकर भक्तों की पुकार सुनें...क्योंकि भक्त आत्माएं अब थक गई हैं...अब वो तुम्हें पुकार रही हैं...हे मेरे इष्ट देव आप कहाँ गये...हे दयालु, हे कृपालु...अब हमें मुक्ति दो...तो अब भक्तों की पुकार सुनो और उन्हें मुक्ति दिलाने के निमित्त बनो।

मैं मुक्तिदाता हूँ - तुम मुक्तिदाता के बच्चे मा. मुक्तिदाता हो...तुम्हें बाप समान मुक्तिदाता बन दु:खी अशान्त और परेशान आत्माओं को सुख-शान्ति के वायब्रेशन्स देने हैं...।

**धारणा -** मनसा, वाचा और कर्मणा, तीनों द्वारा एक साथ सेवा।

समय की समीपता प्रमाण अब बापदादा चाहते हैं कि मनसा-वाचा और कर्मणा इन तीन द्वारा एक साथ सेवा हो। क्योंकि जैसे समय की गति फास्ट है...ऐसे आपकी सेवाओं की गति में भी नवीनता हो...इसलिए मनसा द्वारा प्योर वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करें...वाचा द्वारा परमात्म ज्ञान दान करने की सेवा करें...और कर्मणा द्वारा स्नेह और सहयोग देने की सेवा करें।

**चिन्तन -** संगमयुग पर बाबा ने हमें क्या-क्या स्मृतियां दिलाई हैं? और हम उन स्मृतियों के स्वरूप बनकर कहाँ तक रहते हैं? स्मृति और समर्थी स्वरूप के अनुभव को कैसे बढ़ायें? और ऐसी आत्माओं की क्या-क्या निशानियाँ होंगी?

**साधकों के प्रति -** प्रिय साधकों! बापदादा अब हमारी प्रतिज्ञाओं की फाइल को फाइनल रूप में देखना चाहते हैं...इसलिए दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि अब मुझे पुरानी भाषा को, पुरानी चाल को, अलबेलेपन की भाषा को, कडुवेपन की भाषा को बदलना ही है...इसलिए अब हमें दूसरों को न देख, दूसरों का चिन्तन न कर, स्वयं को देखना है और स्वयं का चिन्तन करना है...तब ही हम स्वयं को प्रत्यक्ष कर परमात्म प्रत्यक्षता कर सकते हैं।

**दिल्ली-लोधी रोड।** विश्व पर्यावरण दिवस पर गेल इंडिया लिमिटेड में 'पर्यावरण सुरक्षा हमारी सुरक्षा' विषय पर प्रवचन के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरिजा, वंदना चानना,कार्यकारी निदेशक, सुनील कुमार,महाप्रबंधक तथा अन्य।

**दिल्ली।** भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी के साथ ज्ञानचर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. बृजमोहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

**बार्बेडॉस।** ब्र.कु.शर्ली बेल के साथ आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् बार्बेडॉस के गवर्नर जनरल एलियट बेलग्रेव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.भारत भूषण।

**भोपाल।** एडमिनिस्ट्रेटर्स के लिए आयोजित मेडिटेशन प्रोग्राम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अवधेष,ज़ोनल डायरेक्टर एंड नेशनल को-ऑर्डिनेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेटर सर्विस विंग, ब्र.कु. रानी तथा अन्य।

**भिलाई नगर।** 'अलविदा डायबिटीज़' शिविर में सम्बोधित करते हुए डॉ. श्रीमंत साहू,माउण्ट आबू, ब्र.कु. आशा, प्रेम प्रकाश पाण्डेय,राजस्व,उच्च व तकनीकी शिक्षा मंत्री छ.ग., डॉ. एम.के. खंडूजा,सी.एम.डी.,अपोलो हॉस्पिटल एवं ब्र.कु. माधुरी।

**केशोद-गुज.।** दिव्य दर्पण युवा रिट्रीट लॉन्चिंग कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रो.गजेरा। साथ हैं डॉ.दिशा पोपट, ब्र.कु. कृति, ब्र.कु. रूपा, डॉ. प्रो. भूपेन्द्रभाई जोषी व ब्र.कु. करण।

**वाराणसी।** 'सौरिच्युअल गेट टूगेदर एंड स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए वी.पी. खरे,जेनरल मैनेजर,डी.एल.डब्ल्यू, ए.के. सिंह,मुख्य यांत्रिक अभियंता, आस्थाना जी,मुख्य विद्युत अभियंता, एस.पी. पिपलानी,भण्डार नियंत्रक, ब्र.कु. सुरेन्द्र, ब्र.कु. सरोज तथा अन्य।